बनकर सुगन्ध

बनकर सुगन्ध तुम जीवन की
बगिया को मेरे मंहकाओ

नयनों के पथ से उतर उतर
मेरे तन मन में बस जाओ
बन फूल मेरी हर धडकन में
मेरी सासों में बस जाओ

बनकर सुगन्ध तुम जीवन की
बगिया को मेरे मंहकाओ

जब नींद न आए रातों को
और बेचैनी सी हो मन में
चँदा की किरणों से झर झर
तुम मीठी लोरी बन जाओ

बनकर सुगन्ध तुम जीवन की
बगिया को मेरे मंहकाओ

मेरे घर की देहरी आंगन
तेरी यादों से मंहक रहे
हर अंग में मेरे चंदन की
बन गंध आज तुम मुस्काओ

बनकर सुगंध तुम जीवन की
बगिया को मेरे मंहकाओ

यह रात चांदनी भी तेरी
आहट से जैसे मंहक रही
मेरे हर सुर में बंधकर तुम
मेरे गीतों में बस जाओ

बनकर सुगन्ध तुम जीवन की
बगिया को मेरे मंहकाओ

यह हवा चल रही झूम झूम
कुछ मतवाली सी चाल से जो
शायद तुमको छूकर आई
तुम और न उसको बहकाओ

बनकर सुगन्ध तुम जीवन की
बगिया को मेरे मंहकाओ

तेरे आने की आहट से
धरती अंबर हैं महक रहे
इन बेला के फूलों को तुम
अपनी सुगन्ध से मंहकाओ

बनकर सुगन्ध तुम जीवन की
बगिया को मेरे मंहकाओ